वैनगंगा क्षेत्र में बसे क्षत्रिय पंवार(पोवार) की गौरवगाथा

मालवा राजपुताना से नगरधन होकर वैनगंगा क्षेत्र में आकर बसने वाले पोवारों का इतिहास बहुत ही गौरवशाली है। कठिन चुनौतियों के बावजूद अपने अदम्य साहस और वीरता के साथ सैकड़ो वर्षों का सफर अपनी पहचान और संस्कृति को बचाते हुए पूरा किया है। छत्तीस क्षत्रिय कुलों के इस संघ ने अपने क्षत्रिय धर्म का सदैव पालन किया और आज भी इनके वंशजों के मुखमंडल से ही वैभवशाली अतीत के दर्शन हो जाते है। मालवा में पंवार राजवंश ने सर्वश्रेष्ठ शासन दिया था। खुद को उज्जैन नरेश विक्रमादित्य के वंशज मानने वाले पंवार(परमार) राजाओं जिसमें राजा उपेंद्र, राजा शियाक, राजा मुंजदेव, राजा भोजदेव, राजा उदियादित्य, राजा जगदेव पँवार, राजा महलकदेव आदि प्रमुख हैं, के द्वारा अपने महान कार्यों से क्षत्रिय वंश की गरिमा को शिखर पर पंहुचा दिया था।

मालवा सहित कई क्षेत्रों पर मुस्लिमों के नियंत्रण के बाद राजपूतों को अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा और फिर हमारे पूर्वजों ने अनेक क्षत्रियों के साथ अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिये दूसरे भारतीय राजाओं का सहयोग किया था। इन्होंने मुगलों से भी संघर्ष किया और उन्हें बुंदेलखंड और देवगढ़ में मुगलों को शिकस्त दी थी। राजपूतों की संयुक्त सेना जिसे विदर्भ में सयुंक्त रूप से पंवार(पोवार) राजपूत कहा गया, ने औरंगजेब की शक्तिशाली सेना को भी शिकस्त देकर देवगढ़ राजा बुलंद बख्त का सहयोग किया था। बाद में इन्ही राजपूतों ने नागपुर के भोसले मराठाओं का भी सैन्य और प्रशासनिक सहयोग कर उन्हें छत्तीसगढ़ से लेकर कटक और बंगाल तक जीतने में सहयोग किया था।

अठारवीं शदी के शुरुवात में नगरधन आकर बसे इन राजपूतों को इन स्थानीय राजाओं ने अपने क्षेत्र में बसाने के लिए वैनगंगा के क्षेत्र दे दिए साथ में सैनिक छावनी और किलों का नियंत्रण भी दिया। नगरधन, आम्बागढ़, प्रतापगढ़, सानगढ़ी, रामपायली, लांजी आदि प्रमुख किलों के किलेदार और सैन्यबल के नियंत्रण की जिम्मेदारी भी पोंवार राजपूतों को दी गयी। साथ में कई जागीरों के जागीरदार भी बनाये गए जिनमें रोशना, तिरखेड़ी, चंदनपुर, महगांव, तिरोड़ा, तुमसर, देवगांव-कोथुरना, उगली-केवलारी, कामठा, मेंढकी, धोबीसर्रा आदि प्रमुख है।

कई विचारकों ने वैनगंगा क्षेत्र में बसे पंवार(पोवार) क्षत्रियों को मुस्लिम आक्रमण के कारण भागकर आया हुआ बताया है जो की पूरी तरह से गलत है। छत्तीस कुल का यह क्षत्रिय समूह औरंगजेब के विरुद्ध संघर्ष में देवगढ़ के राजा शाह बुलंद बख्त के निवेदन पर मालवा, राजपुताना और बुंदेलखंड से सहयोग हेतु इधर आये थे और सैन्य तथा प्रशासन में सहयोग करते हुए इधर ही बस गए थे। बाद में मराठा काल में सैन्य-

प्रशासन में भी पोवारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। स्थानीय राजाओं ने उन्हें इधर स्थाई रूप से बसने के लिए प्रेरित किया था इसीलिए ये पंवार राजपूत अपने परिवार के साथ इधर आकर स्थायी रूप से बस गए थे। इन्होंने अपने परिवार साथ लाये थे और वें छत्तीस कुलों के विभिन्न कुलों में ही विवाह किया करते थे। इसके पूर्व भी बुंदेलखंड सहित राजपुताना के कई सैन्य अभियान में ये सभी कुल एक साथ रहते थे इसीलिए इनकी साझा संस्कृति और एक बोली जिसे पोवारी(पंवारी) कहा जाता है बोलते थे। आज भी पोवारी बोली को सिर्फ छत्तीस कुल के इन पोवारों के द्वारा बोला जाना इसका प्रमाण है की यह बोली शदियों से पोवारों की अपनी भाषा रही है।

कई विचारकों ने वैनगंगा क्षेत्र में आकर बसे पंवारों के गौरवशाली इतिहास को ठीक से नहीं लिखा या तोड़-मरोड़कर लिखा है जिसके कारण आज समाज अपने इस वैभवशाली इतिहास को सही रूप में नहीं जान पाया है, जबकि समाज के गौरवशाली इतिहास की गाथा मराठा काल से लेकर ब्रिटिश काल के अनेक लेखों, दस्तावेजों और किताबों में दर्ज है।

राजपूतों की गौरवगाथा से इतिहास भरा पढ़ा है और इन्होंने अपनी पहचान और क्षत्रिय वैभव को कभी भी नहीं खोया। महाराणा प्रताप, राजाभोजदेव, पृथ्वीराज चौहान और ऐसे ही हजारों क्षत्रियों की गौरवगाथा किसी से भी नहीं छुपी तो भला हमारे पुरखे अपनी पहचान को क्यों छुपाते। उन्होंने अपने मूल वंशनाम और संस्कृति को कभी भी नहीं छोड़ा। वैनगंगा क्षेत्र इनके लिए नया था और इस क्षेत्र में बसने के बाद अपने शौर्य, पराक्रम और मेहनत से इस क्षेत्र को धन-धान्य से भर दिया। आज आवश्यकता इस बात की है की अपने पूर्वजों के सही और गौरवशाली इतिहास से समाज के हर सदस्य को अवगत कराया जाय ताकि वें अपने इस वैभवशाली इतिहास और समृद्ध संस्कृति से परिचित हो सके और इससे प्रेरणा लेकर वर्तमान को भी बेहतर बनाने हेतु पुरे मनोयोग से जुट जाए तथा वे अपने संस्कारों को आगे की पीढ़ियों तक ले जायेंगे।

लेखक : ऋषि बिसेन

क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाजोत्थान संस्थान, बालाघाट